विचार बिन्दु

बूढा होना कोई आसान काम नहीं। इसे बड़ी मेहनत से सीखना पड़ता है। -निर्मल वर्मा

हिन्दी फिल्में बनाने वाले अब धुरंधर हो गये हैं!

हिन्दी सिनेमा में नाटकीयता और भावुकता का पुट हमेशा हावी रहा है। इसीलिए हिन्दुस्तानी फ़िल्में मसाला फ़िल्में कहलाती रही हैं। ऐसी ही एक मसाला फिल्म 'धुरंधर' अभी चर्चा में है और, कहते हैं, खूब कमा भी रही है। इसमें राष्ट्रवाद, देशभक्ति और हिंसा के उन्माद के मसालों वाले पकवान की थाली परोसी गई है। यह 'जोधा अकबर' और 'एलओसी : कारगिल' के बाद 17 सालों में आई सबसे लंबी साढ़े तीन घंटे की हिंदी फीचर फिल्म है जो एक विशेष विचारधारा वाले दर्शकों को खूब पसंद आ रही है। बदले और युद्ध के उन्मादी समूह इस 'स्पाई थ्रिलर' फिल्म को सोशल मीडिया पर भरपूर प्रोमोट कर रहे हैं। यह फ़िल्म असल भू-राजनीतिक तनावों, इंटेलिजेंस सिस्टम और आतंकवाद से जुड़ी घटनाओं पर आधारित है, जिन्हें भारत ने पिछले कुछ दशकों में देखा है। कहानी को कुछ आतंकवादी घटनाओं जैसे कंधार का विमान अपहरण, संसद पर आतंकी हमला, 26/11 मुंबई हमला आदि से जोड़ा गया है। इसमें उन घटनाओं को काल्पनिक और नाटकीय तरीके से प्रस्तुत कर राजनीतिक या राष्ट्रीय भावना को उभारने का प्रयत्न किया गया है। इसमें एक अंडरकवर एजेंट की कहानी दिखाई गई है जो पाकिस्तान के अंडरवर्ल्ड और आतंक से जुड़ी दुनिया में घुसता है। आतंकवादी हमलों, सीमा पार खतरों और इंटेलिजेंस की नाकामियों जैसी बड़ी घटनाओं के संदर्भ से फ़िल्म पर विश्वसनीयता का मुलम्मा चढ़ाया गया है। भारतीय सिनेमा में पिछले कुछ समय से रियलिस्टिक मिलिट्री और इंटेलिजेंस पर आधारित ऐसी कहानियों में तेज़ी आई है, जिनमें से कई असली नायकों से प्रेरित होती हैं, जिससे भोले आम दर्शक उसके नेरेटिव को अक्सर हक़ीकत मान लेते हैं,जबकि असली हक़ीकत उतनी सरल नहीं होती; अत्यंत जटिल होती है। फिल्म के शुरू में दो लाइनें यह लिख कर कि फिल्म में दिखाई गई घटनाएं और चरित्र सब काल्पनिक हैं, चतुराई से बच निकलने का रास्ता होता है जैसा कि इसके निर्देशक आदित्य धर ने परदे पर औसा लिख कर तथा सार्वजनिक रूप से कह कर किया है। आधिकारिक स्पष्टीकरण और सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन के अनुसार भी 'धुरंधर' किसी भी असली व्यक्ति के जीवन पर आधारित नहीं है। यही प्रचार का खेल होता जिसे बाज़ार में मुनाफे की ताकतें खेलती हैं। प्रचारतंत्र के धुरंधर दर्शक को भरमाना जानते हैं। मुनाफे वाले मनोरंजन जगत के फिल्म निर्माता चतुराई से एक काल्पनिक कहानी बनाते हैं जो जानी-पहचानी और असली जैसी लगती है। फिक्शन को असलियत से जोड़कर, ऐसे फिल्म निर्माता-निर्देशक ऐतिहासिक सटीकता या कानूनी दायरे में आये बिना नैतिकता, बलिदान और शक्ति जैसी भावनाओं को उभार कर दर्शकों को सिनेमाघरों की तरफ खींचते हैं। 'धुरंधर' ऐसा ही आकर्षण वाली एक मसाला फिल्म है। आदित्य धर ने अपनी 2019 की फिल्म 'उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक' से दर्शकों को रिझाने के जिस मसाले को पा लिया था, उन्होंने उसे ही फिर इस बारी और अधिक चटपटा बना दिया। 'ऊरी' राष्ट्रवाद कोगर्व के शिखर पर ले जाती है। नारे देते हुए सैन्य कार्रवाई का उत्सव मनाती है;जवाबी हमले को नैतिक विजय की तरह दिखाती है, जबकि 'धुरंधर' उसके एक कदम आगे बढ़ कर हिंसा को विज़ुअल स्पेक्टेकल बना देते हुए बदले और अपमान की भावना को केंद्र में ले आती है, जहां राष्ट्रवाद विचार नहीं, भावनात्मक हथियार हो जाता है। दर्शक को सोचने के लिए नहीं, महसूस करने को तैयार किया जाता है।

चेतन आनंद की 1964 में आई 'हक़ीक़त' को पहली भारतीय वार फिल्म माना जाता है। भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में बनी वह फिल्म किसी सैन्य विजय का उत्सव नहीं मनाती, बल्कि युद्ध की कीमत गिनाती है। वहां सैनिक नायक हैं, लेकिन अजेय नहीं। वे डरते हैं, थकते हैं, टूटते हैं। कर चले हम फ़िदा जान-ओ-तन साथियों जैसा अमर गीत भी राष्ट्रगौरव से अधिक बलिदान की पीड़ा को स्वर देता है। 'हक़ीक़त' राष्ट्रवाद को करुणा और नैतिकता के साथ जोड़ती है। यह फिल्म युद्ध को अंतिम विकल्प के रूप में देखती है, गौरव के तमगे की तरह नहीं। इसलिए उसमें युद्धोन्माद का कोई स्थान नहीं है। लेकिन उसके 60 साल बाद ज़माना बदल गया है ;सदी बदल गई है; पीढ़ियां बदल गई हैं; और साथ ही मानवीय संवेदनाएं भी बदल गई हैं। यह बदलाव सम्पूर्ण भारतीय जन के मन का नहीं है। यह बदलाव उस वर्ग में अधिक सघन है जो पूरी तरह बाज़ार के आगोश में है। इसीलिए आश्चर्य नहीं कि 'धुरंधर' अपने कलात्मक मूल्यों व पारंपरिक सौंदर्य की बारीकियों के लिए नहीं, बल्कि उसकी वैचारिक महत्वाकांक्षा, कहानी की आक्रामकता और परफॉर्मेंस की तीव्रता में ही ज़्यादाआंकी जा रही है। इसे एक तमाशे या राजनीतिक बयान की तरह लिया जा सकता है। यह फिल्म सोचने-समझने वाले सिनेमा के बजाय पॉलिटिकल एक्शन थिएटर के ज़्यादा करीब है। इसकी धुरंधरता सवाल उठाने में नहीं, बल्कि शोर-शराबे वाले मनोरंजन को नफ़रत फैलाने वाला प्रोपेगेंडा बना देने में है जो सत्ताके बल और हिंसा के औचित्य का समर्थन करता है। फिल्म में राष्ट्रभक्ति सूक्ष्म भावना की तरह नहीं, बल्कि आक्रामक-गर्व के रूप में दिखाई गई है। संवादों और दृश्यों में हम बनाम वे का स्पष्ट विभाजन है। सारा प्रयास दर्शक को भावनात्मक रूप से उत्तेजित करने का है, न कि उसे विवेकशील बनाने का। 'धुरंधर' में हिंसा सिर्फ कथानक की जरूरत नहीं है, बल्कि उसे स्टाइलिश, सिनेमैटिक और हीरोइक बना कर देश के वर्तमान विभाजनकारी माहौल में भावनाओं से खेल कर बॉक्स ऑफिस का गल्ला भरने की कोशिश की गई है। फिल्म का पृष्ठभूमि संगीत, स्लो-मोशन दृश्य और संवाद सब मिल कर हिंसा की महानता को स्थापित करते हैं, जिस पर दर्शक गर्व की अनुभूति करता है और अपना पैसा वसूल पाता है। दर्शक को हिंसा समाधान के रूप में सामान्य लगने लगती है। लगभग पूरी तरह नकारात्मक फिल्म पड़ोसी देश को अक्षम्य रूप से ऐसा अपराधी और वहशी बताती है, जिससे सिर्फ नफरत की जा सकती है। फिल्म बनाने वालों के सामने कोई मानवीय दुविधा, नैतिक प्रश्न या वैचारिक संघर्ष नहीं है। फिल्म तर्क से नहीं, भावना से बात करती है। अपमान का बोध करवाते हुए बदले का भाव और राष्ट्र के नाम पर क्रोध भड़काती है। यही तत्व युद्धोन्माद का मनोवैज्ञानिक आधार होते हैं। ऐसे सिनेमाई अनुभव आगे जाकर राजनीतिक उत्तेजना के सबब बन सकते हैं।

हालांकि 'धुरंधर'सीधे युद्ध के लिए नहीं उकसाती और इसे बनाने वाले इसे एक स्पाई-थ्रिलर कह कर इसका बचाव करते है। यह सरकारी दस्तावेज़ भी नहीं है, लेकिन भोला दर्शक यह नहीं समझता। वह तथ्य और कल्पना के बीच की झीनी रेखा को नहीं देख पाता। उन्मादी दर्शक ऐसी फिल्म के स्वयंभू सबसे बड़े प्रचारक बन जाते हैं। यही बाज़ार का खेल होता है। मुनाफा कमाने के लिए वह किसी हद को नहीं मानता और जब राज्य का संवैधानिक नियंत्रण तंत्र उससे हाथ मिला ले तब 'धुरंधर' जैसी फिल्में बनती है।

'धुरंधर' इंटेंस, लेयर्ड और पॉलिटिकली शार्प दिखने की जरूर कोशिश करती है, मगर निर्देशक ने शोर को गहराई और अकड़ को कहानी कहने का तरीका समझ लिया है। दो दिन पहले जयपुर में एक व्याख्यान में भारतीय विधि आयोग के अध्यक्ष दिनेश माहेश्वरी का कहना था कि शोर अक्सर सत्य को दबाने के लिए किया जाता है। फिल्म एक सुसंगत कहानी के बजाय 'पलों' के इर्द-गिर्द लिखी गई लगती है। इसमें परदे पर किरदार नाटकीय ढंग से आते हैं, भारी डायलॉग बोलते हैं, और बिना किसी असली इमोशनल या लॉजिकल नतीजे के गायब हो जाते हैं। नाटकीयता भरे संवाद ऐसे हैं जैसे हर लाइन एक पंचलाइन या वायरल हो सकने वाली टिप्पणी बनाने के लिए लिखी गई हो। तकनीकी स्तर पर 'धुरंधर' ऊपर से भले ही पॉलिश्ड दिखती है लेकिन स्टाइलिश फ्रेम, नाटकीय पृष्ठभूमि संगीत है, और स्लो-मोशन शॉट्स जैसे सिनेमाई तत्वों का इस्तेमाल बैसाखी के तौर पर किया गयाहै। सिनेमैटोग्राफी केवल डार्क टोन और आक्रामक विजुअल्स को प्राथमिकता देती है। समझदार दर्शक को 'धुरंधर' एक ऐसी फिल्म लगती है जो शक्तिशाली होने के बजाय शक्तिशाली दिखने की ज़्यादा परवाह करती है। प्रभावशाली सिनेमा के लिए ज़रूरी तीन चीजें - स्पष्टता, संयम और ईमानदारी- इसमें नहीं हैं। दर्शक को एक थका देने वाला अनुभव मिलता है जिसमें शेखी बघारने के अलावा कुछ नहीं मिलता। मानवीय संवेदना का इसमें कोई स्थान नहीं है जो किसी भी कला का स्तर मापने का पैमाना होता है। यह विजुअली लाउड, कहानी के तौर पर कमजोर, और भावनात्मक रूप से खोखली फिल्म है जिसके कथानक और संवाद वर्तमान सत्तारूढ़ राजनेताओं के संदेशों को प्रमाणित करने का काम करते हैं। 'धुरंधर' उस मानसिकता को पोषित करती है जहां युद्ध आसान, गौरवपूर्ण और अनिवार्य समाधान जैसा दिखने लगता है जबकि इतिहास गवाह है कि युद्ध से कभी कोई समाधान नहीं निकला और न कभी स्थाई शांति आई। हालांकि 'धुरंधर'सीधे युद्ध के लिए नहीं उकसाती और इसे बनाने वाले इसे एक स्पाई-थ्रिलर कह कर इसका बचाव करते है। यह सरकारी दस्तावेज़ भी नहीं है, लेकिन भोला दर्शक यह नहीं समझता। वह तथ्य और कल्पना के बीच की झीनी रेखा को नहीं देख पाता। उन्मादी दर्शक ऐसी फिल्म के स्वयंभू सबसे बड़े प्रचारक बन जाते हैं। यही बाज़ार का खेल होता है। मुनाफा कमाने के लिए वह किसी हद को नहीं मानता और जब राज्य का संवैधानिक नियंत्रण तंत्र उससे हाथ मिला ले तब 'धुरंधर' जैसी फिल्में बनती है। दर्शक की समझ और परिपक्वता फिल्म के लिए निर्णायक मानी जाती है। मगर राजनीति से उभरे सामाजिक ध्रुवीकरण के समय में दर्शक की समझ और परिपक्वता पीछे छूट जाती है। निर्माता-निर्देशक कमाई वाली फिल्म में क्या और कैसे मसाले डाले जाते हैं यही साधता लगता है। वास्तव में यह फिल्म विजयोन्मादी लोग ही पसंद कर रहे हैं। उनको आदित्य धर ने मानो एक ऐसा वीडियो गेम दिया हैं जिसमें खेलने वाले को आभासी जीत का मजा जरूर मिलता है। उन्मादी दर्शक आरामदायक मल्टीप्लेक्सों में बिना युद्ध की हल्की सी भी आंच भुगते, विजयी होते हैं। मगर राजनीतिक और सामाजिक उत्तेजना का माध्यम बनी 'धुरंधर' कितना भी कमा ले, वह विस्मृत हो जाने वाली फिल्म है।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

संस्कृति, इतिहास और सिनेमा : राजस्थान के पर्यटन का नया फ्रेम

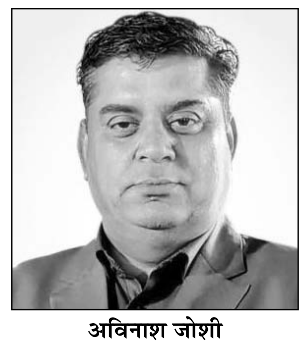

अविनाश जोशी

किलों-महलों, मरुस्थलों और लोक संस्कृति का प्रदेश राजस्थान अब पर्यटन आधारित रचनात्मक अर्थव्यवस्था का एक सशक्त केंद्र बनकर उभर रहा है। वर्ष 2024-25 के आंकड़े इस परिवर्तन की ठोस पुष्टि करते हैं। लगभग 23 करोड़ देशी और 20 लाख विदेशी पर्यटकों का राजस्थान आगमन राज्य की लोकप्रियता का स्पष्ट प्रमाण है। पर्यटन अब रोजगार, निवेश और सांस्कृतिक कूटनीति का माध्यम बन चुका है।

भारत में होने वाली कुल देशी पर्यटन यात्राओं में राजस्थान का 8-9 प्रतिशत हिस्सा और विदेशी पर्यटकों में 21-22 प्रतिशत हिस्सेदारी यह बताती है कि हर 10 विदेशी पर्यटकों में 2 और हर 10 देशी पर्यटकों में लगभग 1 राजस्थान को अपनी यात्रा का हिस्सा बनाता है। यह उपलब्धि नीति-निर्माण और प्रभावी क्रियान्वयन का परिणाम है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा 24 दिसंबर 2025 को मंडावा में राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति-2025 जारी करना एक दूरदर्शी कदम है। यह नीति, पर्यटन को सिनेमा से जोड़कर राज्य की पहचान को वैश्विक मंच पर और सशक्त करने का प्रयास है। शूटिंग आकर्षित करने के साथ ही इसका लक्ष्य स्थाई रोजगार, कौशल विकास, स्थानीय अर्थव्यवस्था का सशक्तिकरण और राजस्थान ब्रांड को विश्वस्तर पर स्थापित करना है।

राजस्थान की ताकत उसकी विविधता अरावली की पर्वतमालाएं, थार का मरुस्थल, ऐतिहासिक किले-महल, हवेलियां, झीलें और जीवंत लोकजीवन में निहित है।

फिल्म नीति का मूल उद्देश्य इन्हीं लोकेशनों को विश्वस्तरीय फिल्मांकन स्थलों के रूप में प्रस्तुत करना है। सिनेमा की वैश्विक पहुंच के दौर में लोकेशन-आधारित ब्रांडिंग किसी भी प्रदेश के लिए पर्यटन का सबसे प्रभावी माध्यम बन चुकी है। एक लोकप्रिय फिल्म या वेब-सीरीज, वर्षों के विज्ञापन से अधिक प्रभाव डालती है और राजस्थान इस संभावना को नीति के माध्यम से अवसर में बदल रहा है।

नीति का सबसे सशक्त पक्ष इसके आकर्षक सब्सिडी प्रावधान हैं। फिल्म निर्माण व्यय पर अधिकतम 30 प्रतिशत तक की सब्सिडी, फीचर फिल्म के लिए 3 करोड़, वेब-सीरीज के लिए 2 करोड़, टीवी सीरियल के लिए 1.5 करोड़ और डॉक्यूमेंट्री के लिए 2 करोड़ की सब्सिडी निर्माताओं को राजस्थान की ओर आकर्षित करेगी।

न्यूनतम व्यय की शर्त (फीचर फिल्म 2 करोड़, अन्य 1करोड़) यह सुनिश्चित करती है कि राज्य में वास्तविक आर्थिक गतिविधि हो। लोकेशन स्क्रीन-टाइम के आधार पर 5-15 प्रतिशत पर 10 प्रतिशत, 16-30 प्रतिशत पर 20 प्रतिशत और 30 प्रतिशत से अधिक पर 30 प्रतिशत सब्सिडी का ढांचा यह संदेश देता है कि राजस्थान केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि कहानी का भी केंद्र बने।

इसके साथ ही 50 प्रतिशत शूटिंग दिवस राज्य में करने पर पूर्ण लाभ और 100 प्रतिशत शूटिंग पर 5 प्रतिशत अतिरिक्त प्रोत्साहन इस नीति को परिणामोन्मुख बनाता है। राजकीय लोकेशनों पर अधिकतम 5 दिन तक शुल्क की 100 प्रतिशत प्रतिपूर्ति और राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीतने वाली फिल्मों के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन (अंतरराष्ट्रीय 1 करोड़, राष्ट्रीय 50 लाख) गुणवत्ता को भी प्रोत्साहित करता है। यह संदेश स्पष्ट है कि गुणवत्ता पर विशेष जोर दिया गया है।

फिल्म पर्यटन नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम मानव संसाधन विकास है। एफटीआई पुणे, सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली में राजस्थान के 10 छात्रों को प्रति वर्ष 50,000 ट्यूशन फीस और 5,000 मासिक स्टाइपेंड का भी प्रावधान किया गया है। यह निवेश भविष्य की प्रतिभाओं में है। इससे राज्य के युवा केवल लोकेशन सपोर्ट तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि निर्देशन, सिनेमैटोग्राफी, लेखन, अभिनय और तकनीकी क्षेत्रों में भी पहचान बनाएंगे।

प्रशासनिक सरलीकरण, शूटिंग लोकेशनों की डायरेक्टरी, ऑनलाइन पोर्टल और वन-स्टॉप समाधान जैसी सहायक सुविधाएं समय और लागत दोनों बचाएंगी।अक्सर फिल्म निर्माण की राह में अनुमति-प्रक्रियाएं बाधा बनती रही हैं। राजस्थान इस नीति से उस धारणा को बदलने की दिशा में अग्रसर है।

थिएटर रिलीज की अनिवार्यता की गई है। हिंदी फिल्मों के लिए 200 स्क्रीन, राजस्थानी के लिए 25, और अन्य भाषाओं के लिए 100 स्क्रीन की अनिवार्यता राज्य की फिल्म संस्कृति और बाजार की विश्वसनीयता को बढ़ाती है। सब्सिडी प्राप्त फिल्मों में राज्य सरकार और पर्यटन विभाग को श्रेय देने की शर्त भी रखी गई है।

इस नीति का व्यापक प्रभाव पर्यटन चक्र में दिखेगा। शूटिंग के दौरान होटल, परिवहन, स्थानीय कारीगर, कलाकार, तकनीशियन सभी को काम मिलता है। फिल्म रिलीज के बाद लोकेशन-टूरिज्म बढ़ता है। दर्शक परदे पर प्रदर्शित दृश्य देखने में अवश्य रुचि रखते हैं। इससे स्थानीय रोजगार, एमएसएमई, हस्तशिल्प और ग्रामीण पर्यटन को नई ऊर्जा मिलती है।

पर्यावरणीय संतुलन, विरासत स्थलों का संरक्षण, भीड़ प्रबंधन और स्थानीय समुदायों की भागीदारी आदि चुनौतियां भी विद्यमान है। राजस्थान की पर्यटन सफलता के वर्तमान आंकड़े और फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति-2025 मिलकर यह संकेत देते हैं कि राज्य ने भविष्य की दिशा तय कर ली है। सिनेमा के फ्रेम में राजस्थान का परिदृश्य जितना भव्य दिखता है, उतनी ही ठोस उसकी नीति-रचना भी है। यह नीति राजस्थान को लोकेशन-हब से आगे बढ़ाकर क्रिएटिव-इकोनॉमी हब बनाने की क्षमता रखती है।

-अविनाश जोशी,
आईटी प्रोफेशनल

राजस्थानी बोली घरों से हो रही लुप्त, कैसे मिलेगी मान्यता

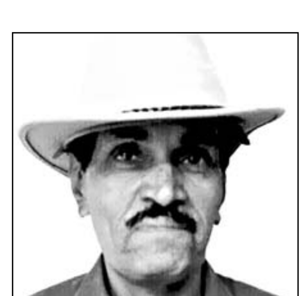

मिश्रीलाल पंवार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने साल 2025 के अंतिम दिन एक सभा में कहा कि लोगों को घर पर अपनी मातृभाषा बोलनी चाहिए।

भागवत के ये बयान राजस्थान के निवासियों के लिए महत्वपूर्ण संदेश है। दरअसल भागवत छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के सोनपैरी गांव में आयोजित 'हिंदू सम्मेलन' को संबोधित कर रहे थे। भागवत ने कहा, "कम से कम हमारे घरों के अंदर हमें अपनी मातृभाषा में बात करनी चाहिए। यदि आप किसी अन्य राज्य या क्षेत्र में रहते हैं, तो आपको उस राज्य या क्षेत्र की भाषा सीखनी चाहिए, क्योंकि सभी भाषाएँ भारत की राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। उनका सभी का समान महत्व है।"

यह बात हर देशवासी के एक संदेश है। मगर राजस्थान में रहने वाले लोगों के लिए यह बात खासतौर से गौर करने लायक है। मातृभाषा किसी भी देश या क्षेत्र की संस्कृति और अस्मिता की संवाहक होती है। इसके बिना मौलिक चिंतन संभव नहीं है। नई शिक्षा नीति में भी कक्षा 5 तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में रखने की बात कही गई है।

लेकिन राजस्थान भाषा को अभी तक संवैधानिक मान्यता नहीं मिली है। यानि इसे आठवीं अनुसूची में स्थान नहीं दिया गया है। ग़ौरतलब है कि 1936 में राजस्थानी को पहली बार संवैधानिक दर्जा देने की मांग उठी थी। लंबी जद्दोजहद के बाद 2003 में राज्य विधानसभा में इस पर सहमति बनी और प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजा गया। इसके बाद केंद्र सरकार द्वारा ओडिशा के वरिष्ठ साहित्यकार एस.एस. महापात्र के नेतृत्व में एक समिति का गठन किया गया। एस.एस. महापात्र ने दो साल बाद रिपोर्ट सौंपी। इसमें राजस्थानी और भोजपुरी भाषा को संवैधानिक दर्जा देने के योग्य घोषित किया गया। 2006 में तत्कालीन गृह मंत्री ने चौदहवीं लोकसभा के कार्यकाल में राजस्थानी को संवैधानिक दर्जा देने का आश्वासन दिया। लिहाजा बिल भी तैयार कर लिया गया। लेकिन आज तक पेश नहीं किया गया। संविधान की मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं में राजस्थानी 17 भाषाओं से बड़ी है। सिंधी केवल 10 लाख लोगों द्वारा बोली जाती है जबकि राजस्थानी बोलने वाले करीब 15 करोड़ लोग हैं। राजस्थानी भाषा को नेपाल, पाकिस्तान आदि देशों में मान्यता है। दुनिया के कई और विश्वविद्यालयों में राजस्थानी पढ़ाई जाती है। कृष्ण भक्त मीराबाई, संत पीपा जी, राजा मानसिंह सहित कई भक्तों ने अपने साहित्य की रचना राजस्थानी में ही की थीं। राजस्थान के लोकगीतों तथा भजनों में राजस्थानी का ही बोलबाला है।जोधपुर के विश्वप्रसिद्ध लोक गायक कालूराम प्रजापति ने कहा कि यह हर राजस्थानी के लिए अत्यंत कष्ट का विषय है कि राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए तरसना पड़ रहा है। मगर हम नागरिकों का भी कुछ कत्तर्व्य बनता है। क्या हम सभी राजस्थानी भाषा का प्रयोग अपने दैनंदिन के कार्यों में करते हैं? क्या हम अपनी संतानों को राजस्थानी भाषा बोलने के लिए प्रेरित करते हैं? जब तक हम खुद राजस्थानी भाषा को अपने जीवन में अनिवार्यतः उपयोग नहीं करेंगे सरकार भी इसकी मान्यता के प्रति गंभीर नहीं होगी।

जोधपुर के पूर्व नरेश गजसिंह भी राजस्थानी भाषा को राजभाषा बनाने और राजस्थानी भाषा को माध्यमिक शिक्षा मंडल में शामिल करने की मांग करते रहें हैं। इसके लिए केंद्र सरकार को कई पत्र लिखे जा चुके हैं। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग के अध्यक्ष गजसिंह राजपुरोहित राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए वर्षो से संघर्ष कर रहे हैं। वे कहते हैं यह राज्य के 15 करोड़ लोगों की भावनाओं का सवाल है। यह समझना होगा कि राजस्थानी भाषा को मान्यता न मिलने के कारण यहां की कला, संस्कृति, विरासत और संस्कार जड़ से नष्ट हो रहे हैं। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के पूर्व अध्यक्ष एवं कला मर्मज्ञ रमेश बोराणा ने कहा कि केन्द्र सरकार ने मान्यता का मामला अटका रखा है। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता मिलने से राजस्थान राज्य के प्रत्येक जिले के लोगों को शिक्षा और रोज़गार प्राप्त करने में मदद मिलेगी। मगर तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। राजस्थान में रहने वाले आम बोलचाल में राजस्थानी का प्रयोग बहुत कम करते हैं। घरों में भी यही हाल है। बच्चों के साथ भी हिन्दी में बात करते हैं। माता-पिता सोचते हैं कि बच्चे अगर राजस्थानी बोलेंगे तो उनका स्टैंडर्ड कम हो जाएगा। आम आदमी की तो बात छोड़िए, राजस्थानी की मान्यता के लिए आवाज उठाने वालों में भी अधिकांश विद्वान अपने दैनिक व्यवहार में हिन्दी को प्राथमिकता देते हैं। सच कहा जाए तो घरों में बच्चों के साथ मातृभाषा में बात करने का चलन खत्म होने की कगार पर है। इस संवाददाता ने अनेक घरों में सर्वे कर पाया कि अधिकांश बच्चे राजस्थानी में फर्राटे से बात नहीं कर पाए। वे राजस्थानी में बात करते असहज नजर आए। बच्चों की यह दशा देखकर उनके अभिभावकों की नियत पर शंका होना स्वाभाविक है। बाहर कुछ और भीतर कुछ और, यह नहीं चलेगा। पहले घर के भीतर राजस्थानी को मान्यता देनी होगी। परिजनों को आपस में मातृभाषा में बात करनी होगी।

इसलिए आज की तारीख में राजस्थान निवासी हर व्यक्ति के लिए भागवत का बयान महत्वपूर्ण संदेश है। अगर हम अपनी मातृभाषा को मान्यता दिलाना चाहते हैं तो सबसे पहले अपने घरों में बच्चों से बातचीत राजस्थानी में करने की आदत डालनी होगी।इसी संदेश की उपेक्षा करते रहे तो राजस्थानी को मान्यता देने की मांग उठाना ही बेमानी होगी। कथनी और करनी का फर्क हमें मिटाना होगा।

-मिश्रीलाल पंवार,
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार है)

पाले से फसलों के बचाव की एडवाईजरी जारी

भीलवाड़ा । जिले में पड़ रही कड़ाके की ठंड एवं शीत लहर से फसलों को बचाने के लिए कृषि विभाग ने एडवाईजरी जारी कर सभी कृषि पर्यवेक्षकों को निर्देश दिये है कि वे किसानों को पाले से फसलों को बचाने की जानकारी दे।

कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक विनोद कुमार जैन ने बताया कि शीत लहर एवं पाले से सर्दी के मौसम में लगभग सभी फसलों को नुकसान होता है,पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियाँ एवं फूल झुलस कर झड़ जाते हैं तथा अध-पके फल सिकुड़ जाते हैं, फलियों एवं बालियों में दाने नहीं बनते हैं व बन रहे दाने सिकुड़ जाते हैं।

संयुक्त निदेशक जैन ने बताया कि शीत लहर एवं पाले से फसल की सुरक्षा के लिए पौधशालाओं के पौधों एवं सीमित क्षेत्र वाले उद्यानों या नगदी सब्जी वाली फसलों में भूमि के ताप को कम न होने देने के लिये फसलों को टाट, पोलीथिन अथवा भूसे से ढक देवें।

कड़कड़ाती ठंड में भी विधायक फ्लावर शो का अवलोकन करने पहुंचे

भीलवाड़ा। शहर की सोसाइटी में आयोजित फ्लावर शो 2026 में आज शहर विधायक अशोक कोठारी द्वारा फ्लावर शो का अवलोकन किया। सोसाइटी द्वारा पर्यावरण के संरक्षण और पर्यावरण में रुचि पैदा करने वाले कार्यों की सराहना की तथा विधायक कोठारी ने प्लांट लवर समिति द्वारा किए जा रहे पर्यावरण

■ फ्लावर शो के लिए कोठारी ने जमीन दिलाने का आश्वासन दिया

के क्षेत्र में कार्यों को देखते हुए भविष्य में एक स्थाई रूप से जमीन आवंटन करने का आश्वासन प्रदान किया । उनके साथ में सामाजिक प्रतिनिधि और उद्योगकर्मी भी साथ थे जिन्होंने सोसाइटी द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना, सचिव प्रियंका सोमानी और संजय राठी ने उन्हें विभिन्न प्रकार के पुष्प, केकटश आदि फूलों से अवगत कराया, जिसमें बाल किशन जी द्वारा संचालित किचन गार्डन ओन रूफ टॉप और बोनसाई पौधे का विशेष आकर्षण रहेगा। वित्त सचिव राकेश तिवारी ने भविष्य में किए जाने वाले राष्ट्रीय स्तर पर फ्लावर शो की महत्वाकांक्षा बताई । कैलाश सोनी ने बताया कि अपराह्न बाद एडिशनल एसपी हेमंत कुमारद्वारा भी फ्लावर शो का अवलोकन किया तथा उन्होंने सोसाइटी द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की, नियमित कार्यकर्ताओं के साथ कार्यक्रम में भारती , हेमल , हर्षा कटियार,सुशील डांगी, रेणू मानसिंहका,भूपेंद्र राणावत, कुसुम कोगटा, रूपा परशुरामपूरियां, भारती शर्मा, मधु कोगटा,रेखा शर्मा, आशा खंडेलवाल, अंकुर जैन, हर्ष कटिहार, पूनम महादेव, हरविंदर कौर, प्रतिभा मानसिंहका, रेखा सोडाणी, संगीता काबरा, सीमा गोयल, सुनील तलेसरा, पंकज मिश्रा आदि मौजूद रहे।

विधायक अशोक कोठारी ने भीलवाड़ा शहर की सोसाइटी में आयोजित फ्लावर शो का अवलोकन किया।

राशिफल

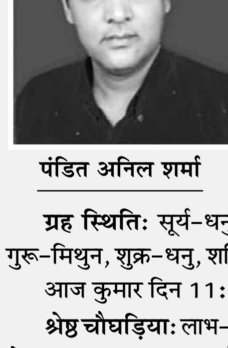

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 7 जनवरी, 2026

माघ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, मघा नक्षत्र दिन 11:56 तक, आयुष्मान योग सायं 6:34 तक, कौलव करण सायं 6:43 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-धनु, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में। आज कुमार दिन 11:56 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:57 तक, शुभ 11:15 से 12:33 तक, चर 3:09 से 4:27 तक, लाभ 4:27 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:44

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या के कारण परेशानी हो सकती है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/परिजनों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित कारणों से अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। बकार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में अनावश्यक वाद-विवाद हो सकते हैं।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ-मांगलिक कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।